दृष्टि The Vision

पुस्तिका सं. (Sheet No.) 1

उत्तर-पुस्तिका (Answer Sheet)

नाम (Name) नीलिमा विषय (Subject) हिन्दी साहित्य तिथि (Date) स्थान/लता

पता (Address)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Q:-

भक्तिकाल सांस्कृतिक-सामाजिक जागरण का प्रतिफल है?

मध्ययुग में भक्ति आंदोलन एक सांस्कृतिक सामाजिक जागरण है। भक्ति काल में भक्ति और साधना नए संदर्भ में आते हैं। भक्ति की जो चेतना दक्षिण से आई वह उत्तर में भक्ति और साधना की एक नई चेतना के रूप में प्रतिफलित हुई। भक्ति आंदोलन के प्रवर्तकों में मुख्य रूप से विशिष्टाद्वैत के प्र. रामानुजाचार्य, द्वैतवाद के मध्वाचार्य, शुद्धाद्वैत के वल्लभाचार्य जो सभी दक्षिण के थे।

शंकराचार्य जो कि उत्तर और दक्षिण को जोड़ने का जो प्रयास किए उसे अपने-अपने ढंग से इन आचार्यों ने पूरा किया। यह भक्ति आंदोलन सिर्फ उत्तर और दक्षिण का ही आंदोलन नहीं है बल्कि इसमें पूरब और पश्चिम के भी साधक और रचनाकार हिस्सा लेते हैं। महाराष्ट्र के वारकरी सम्प्रदाय, आसाम के शंकरदेव, बंगाल के चैतन्य महाप्रभु, गुजरात के नरसिंह मेहता और भारत के अन्य हिस्से इस आंदोलन में अपनी भूमिका निर्धारित करते हुए सामाजिक सांस्कृतिक एकीकरण की कोशिश करते हैं।

पता : प्रथम तल, ए-7 (जय शॉप), (यश सिनेमा के पास), पायल रेस्टोरेंट के निकट, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-27654128, 011-35988616, 9810316396 वेबसाइट : www.drishtithevision.com

यह आंदोलन किसी वर्ग, वर्ण या क्षेत्र का आंदोलन नहीं है बल्कि यह आंदोलन है जनता के संघर्ष का है। यह आंदोलन अपने धार्मिक सांस्कृतिक स्वरूप के बावजूद सत्ता के शोषक व सामन्ती व्यवस्था और धार्मिक शोषक के रूप में पुरोहितों/पंडितों से भी टकराता है।

यह भक्ति आंदोलन विशाल और व्यापक है। इसमें अपने युग के समाज की वास्तविकताएं हैं तो उनका अन्तर्विरोध भी। यदि इसमें सामन्ती व्यवस्था से विरोध है तो उसके विरोध की अभिव्यक्ति भी है। इसमें शास्त्र की रूढ़ियों का विरोध और लोक बंधनों का अस्वीकार है तो तुलसी में लोक और शास्त्र का समन्वय भी है। यह आंदोलन उस आशा का दस्तावेज है जहाँ मानवीय आशा एक विकासशील परम्परा के साथ उपस्थित होती है।

भक्ति आंदोलन का अपना एक सामाजिक-सांस्कृतिक आधार है। भक्त कवि अपने वैयक्तिक अनुभवों को काव्य में लाते हैं। उनकी पीड़ा वैयक्तिक पीड़ा नहीं है, वह शोषित-पीड़ित जन-जन की पीड़ा है। यह ठीक है कि इन कवियों के काव्य में धार्मिकता है लेकिन धार्मिकता को वे अपनी बात जनता तक पहुँचाने के लिए एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाते हैं। कबीर, रैदास, दादूदयाल आदि तो जीवन भर और काजी के खिलाफ संघर्ष करते रहे। इन लोगों ने मनुष्य द्वारा स्थापित अधीनता को ओढ़ा है, वे जीवन भर उसके दर्द का बखान करते रहे। तुलसी के राम का प्रयोजन ही एक समतावादी समाज का संसार का निर्माण है:-

तुलसी ममता राम से समता सब संसार। मीरा के कृष्ण तो जब राणा जी दुरजन के कुचक्र को ध्वस्त करते हैं, राक्षसों का वध करते हैं और -

उत्तर-पुस्तिका (Answer Sheet)

नाम (Name) .... विषय (Subject) .... तिथि (Date) ....

पता (Address) ....

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पीड़ितों की बात किये हैं। यह सच है कि (१) संत भी आध्यात्मिक साधना भी करते हैं लेकिन उनकी साधना एकान्तिक साधना नहीं है। वह साधना है समाज के पीड़ितों की मुक्ति की साधना। इसको आलम 'सर्वोदय' से सदा विश्व तथा जाता है। उनका आत्मविस्तार, जन विस्तार का ही दूसरा नाम है।

भक्ति आंदोलन लोक धर्म का आंदोलन है। लोकधर्म संतों व निम्न वर्गों का धर्म है, जनता मूल्यों का धर्म है। कबीर दास जी समाज में प्रचलित रूढ़ियों, अंधविश्वासों व लोक धर्म की व्याख्या मानते हैं — 'लोका जानि न भूलो भाई'। चंडीदास ने उसी समय कहा 'सबार ऊपरे मानुष सत्य' —। हिंदी के भक्त कवियों ने मनुष्य के कल्याण को ही धर्म माना। इनके ईश्वर से जुड़ने का मतलब है जन-जन से जुड़ना। तुलसी के राम मानवीय मूल्यों के ही रक्षक हैं। तुलसी ने राम के धर्म का आचरण करके यह स्पष्ट कर दिया है कि धर्म का लक्ष्य पारलौकिक नहीं है बल्कि सांसारिक कल्याण है — "परहित सरिस धर्म नहीं भाई"। भक्त कवियों ने यदि अपने समाज के सामाजिक आधार का विरोध किया तो आज भी उनकी प्रासंगिक प्रतिबद्धता ही आज समाज में दिखती है-

दृष्टि

भक्ति का विवेक एक व्यापक विवेकी चेतना है। ये भक्त कवि गाहे-बगाहे अपने समय का अगले में हे भक्त कवि तात्कालिक समाज की, राजनीति, नीति की समझने में सफल रहे हैं। साम्राज्यवाद आक्रांताओं की दमन का दर्शन है। तुलसी कहते हैं — 'जहाँ को नरेश देश-देश को कलेश करे।' अर्थात् ऐसे राजाओं से क्या अपनापन जो देश-देश को क्लेश ना अब पहुँचाते हैं। कृष्ण भक्त सूरदास या अन्य भक्ति कवियों ने गोकुल के कृष्ण को नंदलाल और मथुरा के कृष्ण को द्वारकाधीश बताकर साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपना विरोध ही दर्ज कराते हैं। पुरोहितवाद या संप्रदायवाद, साम्राज्यवाद के ही हथकंडे हैं। दादू दयाल ने हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच के झगड़ों को खत्म करने के लिए उन्हें एक ही शरीर के अंग के रूप में चित्रित किया। हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई के नारे को प्रचारित करने का श्रेय इन्हें दिया जा सकता है — "दोनों भाई हाथ पग, दोनों भाई कान, दोनों भाई आँख है हिन्दू मुसलमान।" तुलसीदास भी जातिवाद के साथ सम्प्रदायवाद पर भी अपना क्रोध जाहिर करते हैं

— मांग के खैबो, मसीत में सोइबो
न लेबे को एक न दैबे को दोऊ ।। - तुलसी

तुलसी ने स्पष्ट किया है भेद है लेकिन यह भेद जातिगत, संप्रदायगत नहीं- वर्गगत है। इस रूप में भक्ति काल के कवि सामाजिक विषमता के वास्तविक कारणों को समझने में सफल हैं। तुलसी ने स्पष्ट किया है कि दो ही जातियाँ हैं एक शासक की दूसरी शोषित प्रजा की, एक राजा की दूसरी प्रजा की।

भक्तिकालीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों की व्याख्या- नारी स्वातंत्र्य की बात एक ही ढंग से नहीं की जा सकती थी, लेकिन

दृष्टि The Vision

पुस्तिका सं. (Sheet No.) 5.

उत्तर-पुस्तिका (Answer Sheet)

नाम (Name) .... विषय (Subject) .... तिथि (Date) ....

पता (Address) ....

सभी भक्त कवियों ने पारिवारिक सम्बन्धों में नारी के मानवीय सम्मान की वकालत करते थे। इन कवियों ने सामन्तवादी वर्ग के एकपक्षीय भोगवादी दृष्टि का विरोध करने के लिए ही नारी को माया की संज्ञा दी। कबीर-जायसी नारी को माया कहते हैं लेकिन पतिव्रता नारियों का सम्मान करते हैं; कबीर कहते हैं - 'पतिव्रता के रूप पर वारों नारि स्वरूप।' तुलसी भी पुरुष और नारी दोनों को पारस्परिकता में आबद्ध रखने वाले कवि हैं जिस तरह देह के लिए आत्मा जरूरी है उसी तरह पुरुष के लिए नारी अनिवार्य है। तुलसी ने नारियों की पराधीनता को देख दुखी हो कहा है - "कत बिधि सृजी नारि जग माहीं
पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं"।

जिस मध्ययुगीन समाज में नारियाँ बन्दी थीं उसी समाज में सूर की गोपियाँ उन्मुक्त हैं। वे मध्ययुग के समाज से स्वतंत्रता की मांग नहीं करतीं बल्कि स्वतंत्रता का प्रयोग करती हैं। इसी क्रम में मीरा जैसी कवयित्री के साथ ही राधा और गोपियों के प्रतीक के रूप में नारी मुक्ति का प्रतीक भी उभर कर आया है। मीरा कहती हैं - 'पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे।'

सभी भक्त कवियों ने अपने-अपने काव्य में एक आदर्श लोक की कल्पना की है। कबीर के यहाँ इस लोक का नाम 'अमरदेसवा' है, सूर के यहाँ 'बैकुंठ' है, जायसी के यहाँ 'सिंहलद्वीप' और तुलसी

के यहाँ राम राज्य प्रदर्शित करके अपने जनता की वर्तमान निकृष्ट भौतिकी भावना के विकल्प के रूप में एक आदर्श राजव्यवस्था का चित्रण करते हैं। इस राज-व्यवस्था में वर्ण-भेद या सम्प्रदाय का भी भेद नहीं है और कुलीन अकुलीन का फर्क नहीं है। यह मनुष्य के मानवीय हक और अधिकार के साथ जिंदगी (जीने) में समानुकूल समाज का सपना और मानक तय कर अपने समय की जनता एवं शासकों, नायकों से ऐसी ही राजव्यवस्था की मांग करने के लिए उत्प्रेरित करते हैं।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि तुलसीदास जिनकी तत्कालीन परिस्थितियों में जहाँ सामाजिक स्तर पर सामंतवादी समाज है, धार्मिक स्तर पर अन्धविश्वास व्याप्त है, आर्थिक स्तर पर गरीबी व्याप्त है उस युग में उन्होंने अपने काव्य कृतियों में रामायण के वास्तविक चरित्र की व्याख्या और विभिन्न संस्कृतियों के समन्वय को आधार बनाकर मानवीय मूल्य को स्थापित करने की चेष्टा की। अर्थात् सामाजिक विसंगति को समाप्त करने का प्रयास किया। अर्थात् 'मानवता' का प्रतीक हैं।

38/60

अति सुन्दर!! (1500 शब्द — 2 घंटे)

IAS ACADEMY